कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात ।

भरे भौन में करत हैं नैनन ही सों बात ॥ 32 ॥

शब्दार्थ :

मिलत = मेल कर लेते हैं ।

खिलत = खिल उठते हैं, प्रसन्न प्रकट करते हैं ।

(अवतरण) — नायक और नायिका के चातुरी से, आँखों की चेष्टा ही के द्वारा, हृदय के सब भावों को परस्पर प्रकट कर देने का वर्णन सखी सखी से करती है—

(अर्थ) — [देखो, कैसी चातुरी से ये दोनों गुंजन से] भरे हुए भवन में आँखों ही में सब [अपने प्रेम की] बात कर लेते हैं (अपने अभिप्राय परस्पर प्रकट कर देते हैं)।

कभी कुछ कहते हैं, [कभी] नटते हैं (निवेदन करते हैं), [कभी] रीझते हैं,

[कभी] खिझते हैं, [कभी फिर] मेल कर लेते हैं, [कभी] खिलते हैं (प्रसन्न होते हैं),

और कभी लजाते हैं ॥

अथवा पूर्वार्ध का अर्थ यों किया जाय—

[नायक कुछ] कहता है (रति की प्रार्थना करता है),

[जिस पर नायिका "मन में भावे, मूड़ी हिलावै" भाव से] नटती है (निषेध करती है)।

[नायक उसकी इस निषेध करने की चेष्टा पर] रीझता है,

[तब नायिका उसकी रीझने की चेष्टा पर बनावट से] खिझती है।

एक सखी दूसरी सखी से नायक-नायिका की प्रेम-लीला का वर्णन कर रही है। वे दोनों लोगों से भरे हुए महल (भौन) में बैठे हैं, इसलिए खुलकर बात नहीं कर सकते। ऐसे में वे आँखों के इशारों से ही अपने मन के भाव व्यक्त करते हैं।

"कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात"

इस पंक्ति में सात क्रियाएँ हैं, जो प्रेम की सात अवस्थाओं को दर्शाती हैं—

- कहत – आँखों से कुछ कहना, मन की इच्छा प्रकट करना।
- नटत – बनावटी ढंग से मना करना या इठलाना।
- रीझत – प्रसन्न होना, प्रेम में पिघल जाना।
- खिझत – बनावटी क्रोध दिखाना।
- मिलत – फिर मान जाना, मेल कर लेना।
- खिलत – प्रसन्न होकर मुस्कराना, मुख का खिल उठना।
- लजियात – अंत में संकोच से लज्जित हो जाना।

यहाँ प्रेम के स्वाभाविक उतार-चढ़ाव को अत्यंत संक्षेप में दिखाया गया है। प्रेम में कभी आग्रह, कभी नखरा, कभी रूठना-मनाना, फिर हँसना और लज्जा — ये सब भाव क्रमशः आते हैं।

"भरे भौन में करत हैं नैनन ही सों बात"

- भरे भौन में – लोगों से भरे हुए महल में।
- नैनन ही सों बात – केवल आँखों से ही बातचीत करना।

अर्थात् सभा में अनेक लोग उपस्थित हैं, इसलिए वे मुख से कुछ नहीं बोलते, परंतु आँखों के संकेतों से ही सब भाव व्यक्त कर देते हैं।

समग्र भावार्थ

यह दोहा प्रेम की सूक्ष्म और मर्यादित अभिव्यक्ति का अद्भुत चित्र है। नायक-नायिका सार्वजनिक स्थान पर बैठे हैं, परंतु उनकी आँखें ही उनके हृदय का संदेश पहुँचा रही हैं।

आँखों के माध्यम से वे—

- प्रेम निवेदन करते हैं,
- मना करते हैं,
- रूठते-मनाते हैं,
- प्रसन्न होते हैं,
- और अंत में लज्जित भी हो जाते हैं।

यहाँ कवि ने दिखाया है कि सच्चा प्रेम शब्दों का मोहताज नहीं होता; नेत्र ही हृदय की भाषा बोल देते हैं।

काव्य-सौंदर्य

1. अनुप्रास अलंकार – ‘कहत, नटत, रीझत, खिझत’ में ‘त’ ध्वनि की पुनरावृत्ति।
2. संक्षिप्तता में व्यापकता – केवल दो पंक्तियों में सम्पूर्ण प्रेम-चित्र प्रस्तुत।
3. श्रृंगार रस (संयोग पक्ष) की सुंदर अभिव्यक्ति।
4. नेत्रों का मानवीकरण – आँखों को बोलने वाला बताया गया है

“पाहु सहायक देन को नाहीं बैठी आहि।

फिरि फिरि, जाति महावरि, एड़ी मीड़ति जाहि।। ” 35

प्रसंग

यह पद श्रृंगार रस से संबंधित है। इसमें एक ऐसी नायिका का चित्रण है जो अपने प्रिय के प्रेम में निमग्न है। वह श्रृंगार कर रही है, किंतु प्रिय की अनुपस्थिति के कारण उसका मन स्थिर नहीं है। कवि ने अत्यंत साधारण-से दृश्य (महावर लगाना) के माध्यम से नायिका की भीतरी भावावस्था को अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

विस्तृत व्याख्या

“पाहु सहायक देन को नाहीं बैठी आहि।”

यहाँ ‘पाहु’ का अर्थ प्रिय या पति है। नायिका कहती है कि उसका प्रिय उसके पास सहायता देने के लिए नहीं बैठा है।

भारतीय काव्य-परंपरा में यह मान्यता रही है कि प्रेमी-युगल एक-दूसरे के श्रृंगार में सहायक होते हैं। जब प्रिय स्वयं पास बैठकर नायिका के पैरों में महावर लगाए, तो वह क्षण अत्यंत मधुर और स्नेहपूर्ण होता है।

किन्तु यहाँ प्रिय अनुपस्थित है। वह अकेली बैठी है। यह अकेलापन केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक भी है। उसके मन में प्रिय की स्मृति है, पर वह सामने नहीं है। इसी कारण उसका मन उदास और चंचल है।

“फिरि फिरि, जाति महावरि, एड़ी मीड़ति जाहि।”

नायिका अपने पैरों में महावर लगा रही है। महावर पैरों को सुंदर बनाने के लिए लगाया जाता है।

परंतु उसका मन इतना व्याकुल है कि वह बार-बार अपनी एड़ी को रगड़ देती है। महावर ठीक से नहीं लग पाता।

“फिरि-फिरि” शब्द से उसकी चंचलता और अधीरता प्रकट होती है। वह ध्यान से श्रृंगार नहीं कर पा रही। उसका मन प्रिय के स्मरण में डूबा हुआ है।

एड़ी को बार-बार रगड़ना उसके आंतरिक संकोच, लज्जा और प्रेम-व्याकुलता का प्रतीक है। ऐसा लगता है कि वह बाहर से श्रृंगार कर रही है, पर भीतर से प्रिय की स्मृतियों में खोई हुई है।

भावार्थ

इस पद में कवि ने नायिका के प्रेम की कोमलता को अत्यंत सूक्ष्म ढंग से व्यक्त किया है।

प्रिय की अनुपस्थिति में उसका मन उदास है। वह श्रृंगार कर रही है, पर मन कहीं और है। बार-बार महावर का बिगड़ जाना इस बात का संकेत है कि उसका ध्यान बाह्य सजावट में नहीं, बल्कि प्रिय की स्मृति में है।

यहाँ बाह्य क्रिया (महावर लगाना) और आंतरिक भावना (प्रेम-व्याकुलता) का सुंदर सामंजस्य दिखाई देता है।

काव्य-सौंदर्य

1. श्रृंगार रस की प्रधानता है।
2. "फिरि-फिरि" शब्द में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का सौंदर्य है।
3. सरल शब्दों में गहन भावों की अभिव्यक्ति कवि की विशेषता है।
4. नायिका की मनोवैज्ञानिक स्थिति का अत्यंत सूक्ष्म चित्रण हुआ है